श्री मौनानन्द पर्वत (भाईजी)

रचित संगीत

१

तोमारि साधना तोमारि वन्दना,
हउक आमारि जीवन सम्बल।
तोमारि स्तवे तोमारि भावे,
पराण आमारि हउक उछल।
आमि आकाशेर पाने
तोमारि सन्धाने अनिमेषे चेये रबो;
आमि चाहिबो ना किछु, कबो ना कथाटि,
केवल चरणे लुटाबो निये आँखिजल।
आमि तोमारि असीमे घुरिबो, फिरिबो
तोमारि महिमा गाने।
आमि तोमारि आनन्दे रबो सदानन्दे
तुलिया तोमार नामेर हिल्लोल।
आमार सकल कर्म सकल धर्म,
तोमार पूजार लागि।
परिहरि दूरे बुद्धि-विचार,
रातुल चरण करिबो सम्बल।[1]

---

१. शाहबाग, १३३३ वंगाब्द; "पागलेर गान" नाम से यह गाना छपा था।

तोमाय नमो हे नमः, आमाय क्षमो हे क्षमो,
तोमाय डाकितेछि मागो बार बार;
पाइले (तोमार) चरणेर छाया संशय याबे टुटिया
आमार श्रान्त हृदय हइबे शीतल।

–माँ–

२

तोमारि चरण-रेणु माखि अङ्गे धन्य हइते चाइ;
मरमे मरमे जीवने मरणे तोमारि हइया याइ।
हृदि-शतदले पद-शतदल क्षण राखि करो त्रिताप शीतल,
आमारे पवित्र करो निरमल—(यैनो) दिवानिशि तोमा पाइ।
हे चिर वाञ्छित, हे चिर सदय!पराण आमार करो गो तन्मय,
तुमि आमिमय, आमि तुमिमय–(यैनो) श्रीचरणे लय पाइ।

–माँ–

३

तोमारि चरणे आमार पराण पिरीति निगड़े बाँधो हे।
आमार बलिया येखाने या आछे, तोमार करिया लओ हे।
अतल, अगाध, अपार तोमार, सुधा-विगलित प्रेम-पारावार,
(ताय) डुबाइया दाओ आमि ओ आमार, सुंदर चिर नवीन हे!
आमारे भाङ्गिया करो चुरमार, ओहे प्रियतम, प्राणेश आमार,
तोमार बाहिरे यैनो मोरे आर कोथा देखा नाहि याय हे।
तुमि कतो बड़ो गिरि हिमाचल, आमि क्षुद्र अति हीन, निःसम्बल
तोमारि छायाय करिया शीतल, तोमार काङ्गाल करो हे।
सुखे, दुःखे, मोर जीवने, मरणे, पुलके, विषादे, घुमें, जागरणे।
लुटाये पड़ितें तोमार चरणे आमाय शकति दाओ हे।

आपनार माझे करि अहंकार, तुलि वृथा कतो बेसुरा झंकार,
लाजे मरि शेषे करि हाहाकार; चरणे टानिया लओ हे।
आमार स्वभाव करा अपराध, रागद्वेष, हिंसा, वाद, विसम्वाद,
"जीवे क्षमा, दया" एइ तव साध आमाय प्रसन्न हओ हे।
तव शुभ इच्छा करिते पूरण, आमार सर्वस्व करह हरण,
पागल करिया दाओ प्राण-मन, घुचाओ मर्म-वेदना हे।

– माँ –

४

तोमारि चरणे पराण आमार
लओ मागो उपहार
आमार संसार जीवन आमार
हासि आर अश्रुभार।
तोमारि कारणे उचाटन मन
भकति बन्धने करियो बन्धन,
हृदय-वीणाय रागिणी तोमार
भङ्कारियो अनिवार।
खुले दिओ मोह-अन्ध दुनयन
सर्वमय तोमा करि दरशन,
जीवने मरणे पूजिते तोमाय
सर्वमयी सर्वाधार।
आमारे विस्मृत करिओ विमल,
तोमारइ काजे आकुल पागल,
तुमिमय मागो रचि भूमण्डल
लभि प्रेम-पारावार।

– माँ –

५

आत्म-समर्पणे करि मृत्युपण
देह-तरीखानि दाओ भासाइया;
चेये रओ मार मुखे निरवधि,
दाँड़ पाल, हाल सकलि छाड़िया।
यदि उठे पथे बादल बातास,
ना करिओ भय, ना करिओ त्रास;
रुद्ध करि भाषा, प्राणेर स्पन्दन,
जड़ेर मतन थाकिओ बसिया।
कभु अहंकार हइले जाग्रत
भकति विश्वासे करियो संयत;
मुखे, बुके श्वासे रेखो मातृ-नाम
धन जन गेह सकलि भुलिया;
मायेर मोहन मूरति मधुर,
राखिओ हृदय-दर्पणे आँकिया।[1]

– माँ –

६

हरषे विषादे किंवा सुखे-दुःखे, अविराम डाको माँ, माँ, माँ, माँ!
मातृ-गर्भ हते यखनि पड़िले, विश्व-जननी निल तुले कोले;
करिलो दीक्षित "ओंया" मन्त्रे, डाकिते शिखालो माँ, माँ, माँ, माँ।
आपनाते भर करिया आपनि, गियाछो भुलिया आदि महाध्वनि।
ताइ वेद-तन्त्र खुँजिया बेड़ाओ असीम अनन्तेर सीमा।

१. मुसौरी, ज्यैष्ठ १३४१ वंगाब्द।

यदि ईशतत्त्व जानिबारे चाओ, नाना रूप यतो माँ-बीजे डुबाओ,
भास आँखिनीरे, माँ माँ माँ बले, करो पथेर सम्बल आनन्दमयी माँ।
मायेर शेष भिक्षा[1] करिया स्मरण, लक्ष्य-नामे बाँधो देह प्राण मन,
शिशुर मतन हासिया नाचिया, अविराम डाको माँ, माँ, माँ, माँ।[2]

– माँ –

७

ऊषा-अरुणे प्राण-विजने करो मायेर नाम गान,
जननी अमृत-सिन्धु! पापी तापीर प्राणाराम।
मातृ-नामामृते पाखी शत शत
घुमन्त धरणी करिलो जाग्रत,
मनोभृङ्ग विमोहित—परिमल करे पान,
मातृ-नाम-गाने सिन्धु नृत्यपर,
प्रेमाकुल चित्त सरित् निर्झर,
प्रमोदित चराचर—(करे) प्रेमामृते प्राणदान।

—माँ—

८

बहु दिन गत हयेछि वञ्चित ओ तव श्रीपदे जननि,
अन्तरे सञ्चित हइयाछे कतो अश्रु-विजड़ित वाणी!
स्तब्ध आकाशेते पेते आछि कान,
एलो एलो बोले शिहरिछे प्राण;
तापित चित्तेर मौन निश्वासे तपत निखिल धरणी।

१. (६) "मेरे लिए प्रतिदिन दस मिनट तक 'नाम' करो"—जीव के निकट माँ ने यही भिक्षा माँगी है—शुद्ध आत्मचिन्ता के हेतु।
२. "मातृदर्शन"—पृष्ठ १३४।

सब काड़ियाछो आरो केड़े नाओ,
सकल बन्धन छिन्न करे दाओ;
शुधु रेखो अधिकार श्रीपदे तोमार,
कांदिवे दिवस यामिनी।

—माँ—

९

गान गाइयो आज हलो शेष;
कृताञ्जलि चेये आछि तोमारि निदेश।
मरमेर भाषा प्राणेर रागिणी
श्रीचरणे सबि सँपेछि जननि,
शून्य नयन पुण्य स्वपने
विभोर करियो शेष।

दियो शुद्धा भक्ति प्रेम सुविमल,
तोमारि चरणे विश्वास अटल,
भेङे मायास्वप्न प्लावि आँखिजल
लीला मोर करो शेष।

मनने, मरमे, स्वपने सघन—
आकुल हइया प्रेमाकुल मन,
माखि पदरेणु दियो ए जीवन
धन्य हइते शेष।

प्रणव-अमृते सिक्त करि प्राण,
जीवनेर दिवा करो अवसान;
नियो, सबि नियो, काङाल करियो—
दियो स्मृतिटुकु अवशेष।[1]

—माँ—

१. कार्त्तिक १४,१३३५ वंगाब्द।

१०

तोमारि इच्छा करिया पूर्ण
आमारे धन्य करो हे।
आमार-आमार करि चिरनाश
प्रेमे तव प्रिय, गड़ो हे।

दुःख दाओ यतो सुखे सहिते
विरहे मिलने हेदि विभासित;
तोमारि साधने तोमारि महिमा,
तोमारि प्रेरणा हे।

आमि आकाशे पातिया कान
शुनियाछि महागान;
उदार हृदय-सागरे डुबिया
पेयेछि अगाध प्रणय हे।

सगुणे निर्गुणे करि विमिश्रण
विभिन्ने अभिन्ने मूर्ति मनोरम;
अरूप स्वरूप पूर्ण निराकार
मागो, हेरिबारे आँखि दाओ हे।

—माँ—

११

अमार साधन भजन सकलि तुमि,
कभु देखि तुमि, कभुओ बा आमि,
कभु नाइ आमि तुमि।

कभु देखि तब नाइ काया छाया
कभु देखि आछो सेजे महामाया,
कोथाय बा आछो कोथाय बा नाइ,
खुँजिया ना पाइ आमि।
हे अनादि-अन्त जगत-जीवन,
घुचाओ मरम निविड़ क्रन्दन,
राखो अविच्छेदे मिलने विच्छेदे,
ओ राङा चरणे स्वामी।

—माँ —

■